

किसानों को सिर्फ 4% की दर से मिलेगा 5 लाख रु. तक का लोन

❑ *केसीसी योजना के लिए लाभ लेना बहुत आसान, मिल रहे बड़े फायदे* ❑ *किसान, चाहे वह जमीन का मालिक हो या बटाइदार, कर सकते हैं आवेदन*
❑ *केंद्र सरकार ने लोन सीमा को 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख रुपये तक किया* ❑ *खेती, पशुपालन या मछली पालन के लिए ले सकते हैं किरायाती लोन*
❑ *किसान क्रेडिट कार्ड योजना की शुरुआत 1998 में हुई थी* ❑ *इसका मकसद किसानों को खेती की जरूरतों के लिए सस्ता लोन उपलब्ध कराना*

जानकारी

बिजनेस डेस्क

किसानों के लिए खेती को आसान और किरायाती बनाने के मकसद से शुरू की गई किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) योजना अब और भी फायदेमंद हो गई है। केंद्रीय बजट 2025-26 में केंद्र सरकार ने इस योजना की लोन सीमा को 3 लाख रुपये से बढ़ाकर 5 लाख रुपये कर दिया था। इतना ही नहीं, इसकी ब्याज दर भी 4% सालाना है, जो किसानों के लिए बड़ा लाभ है। इसके साथ ही सरकार ने इस योजना की ब्याज सहायता (इंटेरेस्ट सब्सिडी) को वित्त वर्ष 2025-26 तक बढ़ाने का फैसला किया है, जिससे किसानों को सस्ता लोन मिलना जारी रहेगा। यह खबर उन लाखों किसानों के लिए खुशखबरी है, जो खेती, पशुपालन या मछली पालन के लिए किरायाती लोन की तलाश में हैं। आइए, इस योजना को विस्तार से समझते हैं और जानते हैं कि इसे लेना कितना आसान है।

क्या है किसान क्रेडिट कार्ड योजना

किसान क्रेडिट कार्ड योजना की शुरुआत 1998 में हुई थी। इसका मकसद था किसानों को उनकी खेती की जरूरतों के लिए सस्ता और आसान लोन उपलब्ध कराना। इस योजना को भारत सरकार, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) और नाबार्ड ने मिलकर शुरू किया था। यह कार्ड किसानों को एक क्रेडिट लाइन देता है, जिसका इस्तेमाल वे बीज, खाद, कीटनाशक, कृषि उपकरण खरीदने पशुपालन और मछली पालन जैसे कामों के लिए कर सकते हैं। इस कार्ड की खासियत यह है कि यह 5 साल की वैलिडिटी के साथ आता है और समय पर लोन चुकाने पर ब्याज में छूट भी मिलती है।



बढ़ गई सीमा

हाल ही में सरकार ने किसान क्रेडिट कार्ड के तहत लोन की अधिकतम सीमा को 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख रुपये कर दिया है। यह फैसला 2025 के बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने लिया, जिसका मकसद किसानों को उनकी बढ़ती जरूरतों के लिए ज्यादा आर्थिक सहायता देना है। इस लोन पर सामान्य ब्याज दर 7% सालाना है, लेकिन सरकार 2% की ब्याज सहायता देती है। इसके अलावा, अगर किसान समय पर लोन चुका देते हैं तो उसे 3% की अतिरिक्त छूट मिलती है। इस तरह प्रभावी ब्याज दर सिर्फ 4% रह जाती है। यह सुविधा खेती के साथ-साथ मछली पालन और पशुपालन करने वाले किसानों के लिए भी उपलब्ध है।

बढ़ाई गई ब्याज सहायता की डेडलाइन

केंद्र सरकार ने हाल ही में संशोधित ब्याज सहायता योजना को वित्त वर्ष 2025-26 तक बढ़ाने की मंजूरी दी है। इसका मतलब है कि किसानों को अगले वित्त वर्ष तक 4% की रियायती ब्याज दर पर लोन मिलता रहेगा। यह फैसला मई 2025 में केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में लिया गया। इस कदम से देश के करीब 7.7 करोड़ किसानों, मधुआरों और डेयरी किसानों को फायदा होगा। यह योजना सुनिश्चित करती है कि किसानों को कम लागत पर कार्यशील पूंजी मिले, ताकि वे अपनी खेती को और बेहतर कर सकें।

आसान है केसीसी बनवाना

किसान क्रेडिट कार्ड बनवाना बेहद आसान है। कोई भी किसान, चाहे वह जमीन का मालिक हो, किरायेदार किसान हो या बटाईदार, सभी इस योजना के लिए आवेदन कर सकता है। इसके लिए जरूरी डॉक्यूमेंट्स में आधार कार्ड, पैन कार्ड, जमीन के डॉक्यूमेंट और फसल की जानकारी शामिल होती है। आवेदन को प्रक्रिया ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से उपलब्ध है। ऑनलाइन आवेदन के लिए किसान को पीएम किसान योजना की वेबसाइट (pmkisan.gov.in) पर जाना होगा। वहां से केसीसी का फॉर्म डाउनलोड कर सकते हैं। फॉर्म में जमीन और फसल की जानकारी भरकर, जरूरी डॉक्यूमेंट्स के साथ इसे नजदीकी बैंक में जमा करना होता है।

कैसे करें इस्तेमाल?

किसान क्रेडिट कार्ड एक रिवायलिंग क्रेडिट कार्ड है। इसका मतलब है कि किसान जरूरत के हिसाब से पैसे निकाल सकता है और चुकाने के बाद फिर से लोन ले सकता है। लोन की राशि फसल को कटाई और बिक्री की अवधि के आधार पर चुकानी होती है। किसान को साल में दो बार ब्याज और एक बार पूरी लोन राशि जमा करनी होती है। अगर समय पर भुगतान किया जाता है, तो अगले ही दिन नया लोन लिया जा सकता है। यह लचीलापन किसानों के लिए बड़ा फायदा है, क्योंकि वे अपनी जरूरतों के हिसाब से पैसे का इस्तेमाल कर सकते हैं।

कौन उठा सकता है फायदा

यह योजना सिर्फ खेती करने वालों तक सीमित नहीं है। पशुपालन, मछली पालन, बागवानी या अन्य कृषि से जुड़े काम करने वाले लोग भी इसके लिए पात्र हैं। इसके अलावा, स्वयं सहायता समूह और संयुक्त देवता समूह भी इस कार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। सरकार का मकसद है कि ज्यादा से ज्यादा किसानों को इस योजना का लाभ मिले, ताकि वे अपनी खेती को आधुनिक और लाभकारी बना सकें।

सिक्वोरिटी की जरूरत नहीं

अगर ऑनलाइन प्रक्रिया में दिक्कत हो, तो किसान अपने नजदीकी बैंक शाखा में जाकर सीधे आवेदन कर सकता है। बैंक में एक साधारण फॉर्म भरना होता है, जिसमें जमीन के कागजात और पहचान पत्र जमा करने होते हैं। आमतौर पर, अगर सभी डॉक्यूमेंट सही हैं, तो 5 से 7 दिनों के अंदर बैंक लोन स्वीकृत कर देता है। इसके अलावा, 1.6 लाख रुपये तक के लोन के लिए कोई सिक्वोरिटी देने की जरूरत नहीं होती। 3 लाख रुपये से ज्यादा के लोन के लिए जमीन या अन्य संपत्ति को सिक्वोरिटी के तौर पर रखना पड़ सकता है। साथ ही, इस कार्ड के साथ किसानों को फसल बीमा और डेबिट कार्ड जैसी सुविधाएं भी मिलती हैं।

कम खर्च में बढ़िया कमाई करवाने वाले 5 स्मॉल कैप फंड कर सकते मालामाल

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड्स पर स्टॉक मार्केट की उथल-पुथल का ज्यादा असर पड़ता है। यानी बाजार में गिरावट आने पर उनके ज्यादा तेजी से गिरने की आशंका रहती है, लेकिन इसके साथ ही रिकवरी होने पर उनमें मुनाफे की गुंजाइश भी अधिक होती है। यही वजह है कि स्मॉल कैप फंड्स को हाई रिस्क, हाई रिटर्न इनवेस्टमेंट माना जाता है, लेकिन हम इस रिपोर्ट में 5 ऐसे स्मॉल कैप फंड्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्हें पिछले 5 साल के प्रदर्शन के आधार पर लो कॉस्ट, हाई रिटर्न यानी कम खर्च में मोटा मुनाफा देने वाला कहा जा सकता है। इन सभी फंड्स का 5 साल का औसत सालाना रिटर्न 35% से 39% तक रहा है, वह भी काफी कम लागत यानी एक्सपेंस रेशियो के साथ। जिन 5 स्मॉल कैप फंड्स की जानकारी दी है, उनका 5 साल का एवरेज एनुअल रिटर्न 35.81% से लेकर 39.61% तक है। इस हाई रिटर्न की बदौलत इन फंड्स ने 1 लाख रुपये के एकमुश्त निवेश को 5 साल में 4.65 गुना से लेकर 5.3 गुना तक कर दिखाया है। इतना ही नहीं, इन स्मॉल कैप फंड्स में अगर किसी ने 5 साल तक हर महीने 5,000 रुपये का निवेश किया होगा, तो उसकी मौजूदा फंड वैल्यू भी 5.74 लाख रुपये से लेकर 6.57 लाख रुपये तक हो गई होगी। इन सभी फंड्स को वैल्यू रिसर्च ने 5 या 4 स्टार की रेटिंग दी है और इनके डायरेक्ट प्लान का एक्सपेंस रेशियो 0.34% से 0.65% के बीच है, जिसे काफी किरायाती माना जा सकता है।



- 1. निपॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न (डायरेक्ट प्लान) : 39.61%
 - एक्सपेंस रेशियो (डायरेक्ट प्लान) : 0.65%
 - 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 5.3 लाख रुपये
- 2. बंधन स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न (डायरेक्ट प्लान) : 38.21%
 - एक्सपेंस रेशियो (डायरेक्ट प्लान) : 0.39%
 - 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5
- 3. एडलावाइन स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न (डायरेक्ट प्लान) : 32.04%
 - 5000 रुपये मेंथली एसआईपी की 5 साल में फंड वैल्यू : 6,57,581 रुपये (एन्गुलाइज्ड रिटर्न : 26.32%)
- 4. टाटा स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न
- 5. इनवेस्को इंडिया स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न (डायरेक्ट प्लान) : 35.98%
 - एक्सपेंस रेशियो (डायरेक्ट प्लान) : 0.34%
 - 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 4.65 लाख रुपये
 - 5000 रुपये मेंथली एसआईपी की 5 साल में फंड वैल्यू : 5,83,439 रुपये (एन्गुलाइज्ड रिटर्न : 26.98%)
- 5. इनवेस्को इंडिया स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न (डायरेक्ट प्लान) : 35.81%
 - एक्सपेंस रेशियो (डायरेक्ट प्लान) : 0.44%
 - 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 4.62 लाख रुपये
 - 5000 रुपये मेंथली एसआईपी की 5 साल में फंड वैल्यू : 6,16,477 रुपये (एन्गुलाइज्ड रिटर्न : 29.31%)

35% से 39% तक रहा 5 साल का एनुअल रिटर्न, निवेशकों के पैसों को साढ़े चार गुना से 5 गुना तक बढ़ाया बेहद कम एक्सपेंस रेशियो के साथ दे रहे अच्छा रिटर्न

स्मॉल कैप में निवेश से पहले रिस्क समझ लें

स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड्स लॉन्ग टर्म में औसत से काफी बेहतर रिटर्न देने के लिए जाने जाते हैं। लेकिन इन पर बाजार की उथल-पुथल का ज्यादा असर पड़ता है। इसी वजह से इन्हें काफी अधिक जोखिम की रेटिंग दी जाती है, लेकिन जो निवेशक हाई रिटर्न के लिए ज्यादा रिस्क लेने की क्षमता रखते हैं, वे अपने पोर्टफोलियो में इन्हें जगह दे सकते हैं। अगर सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिये लंबी अवधि तक निवेश किया जाए, तो इस रिस्क को कुछ हद तक कम किया जा सकता है। ऐसे में निवेशकों को कम से कम 7 साल या उससे ज्यादा समय के लिए निवेश जारी रखना चाहिए। साथ ही स्मॉल कैप में एक्सपोजर 10-15 फीसदी से ज्यादा नहीं होना चाहिए। इसलिए अगर अगर आप लंबी अवधि के लिए निवेश की सोच रहे हैं और ज्यादा जोखिम उठाने को तैयार हैं, तो स्मॉल कैप फंड्स अच्छा रिटर्न देने का दम रखते हैं, लेकिन ध्यान रखें कि ये फंड्स वोलाइल होतें हैं और शॉर्ट टर्म में उतार-चढ़ाव ला सकते हैं।

रिटायरमेंट की रेस जीतनी है तो पहले से करें तैयारी

सुझाव
बिजनेस डेस्क

अगर आप भी चाहते हैं कि आपका बुढ़ापा पूरी मस्ती में कटे तो रिटायरमेंट के लिए बेहतर प्लानिंग करें। इससे आपको असाानी रहेगी और समय रहते आप रिटायरमेंट के लिए अच्छा खासा पैसा जुटा लेंगे। रिटायरमेंट की प्लानिंग ऐसी दौड़ है, जिसमें जीतना है तो शुरुआत समय रहते करनी होगी। अगर आप आखिरी वक्त में तैयारी शुरू करेंगे, तो न तो सही ढंग से पैसों का इंतजाम हो पाएगा और न ही रिटायरमेंट के बाद की ज़िंदगी सुकुन भरी बन पाएगी। कामकाजी ज़िंदगी के शुरुआती दौर में रिटायरमेंट भले ही काफी दूर का लक्ष्य नजर आता हो, लेकिन उसके लिए जितनी जल्दी तैयारी शुरू की जाएगी, बाद में उतनी ही आसानी होगी। इसके लिए समय रहते अमाउंट जुटा लेना जरूरी है। तभी आपका बुढ़ापा बिना किसी टेंशन के कट सकेगा। वरना बड़ी परेशानी हो सकती है।

जल्द शुरुआत बड़ा फायदा

जानकारों का कहना है कि रिटायरमेंट प्लानिंग को आखिरी समय की तैयारी के तौर पर नहीं, बल्कि आदत के रूप में अपनाना चाहिए। जो लोग शुरुआत से ही छोटी-छोटी रकम निवेश करना शुरू कर देते हैं, उन्हें इससे समय रहते आप अच्छा खासा पैसा जुटाकर अपने जीवन का समृद्ध बना सकते हैं। उनका यह भी मानना है कि रिटायरमेंट की तैयारी एक लंबी प्रक्रिया है और यह एक बार का काम नहीं, बल्कि लगातार चलने वाली आदत होनी चाहिए। अगर आप अपने करियर के शुरुआती सालों में ही निवेश की आदत डाल लेते हैं, तो समय के साथ आपका फंड अपने आप बढ़ता जा जाएगा।

रेगुलर इनवेस्टमेंट

रिटायरमेंट फंड के लिए हर महीने एक तय रकम अलग रखना जरूरी है। यह रकम आपकी आमदनी के अनुसार कम ज्यादा हो सकती है, लेकिन इसे एक नियम की तरह अपनाना चाहिए। इससे यह प्लानिंग सिर्फ कागज पर नहीं, आपकी वित्तीय आदतों में शामिल हो जाएगी। हर महीने रिटायरमेंट के लिए निवेश की गई छोटी-छोटी रकम भी लंबे समय में बड़ा फंड तैयार कर सकती है, बशर्ते आप रेगुलर इनवेस्टमेंट का सिलसिला बनाए रखें।

सही एसेट एलोकेशन है बेहद जरूरी

रिटायरमेंट के लिए निवेश करते वक्त सिर्फ सेविंग अकाउंट या फिक्स्ड डिपॉजिट पर भरोसा करना ठीक नहीं। आपको अपनी रिस्क लेने की क्षमता के हिसाब से इक्विटी और डेट जैसे विकल्पों के बीच संतुलन बना कर निवेश करना चाहिए। नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) इस मामले में एक बेहतर विकल्प है, क्योंकि इसमें आप अपनी रिस्क प्रोफाइल के मुताबिक इक्विटी, डेट और गर्नमेंट बॉण्ड्स का चुनाव कर सकते हैं।

इंफ्रिमेंट के साथ बढ़ाते चलें निवेश

जैसे-जैसे आपकी सैलरी बढ़ती है, वैसे ही रिटायरमेंट के लिए की जाने वाली निवेश की रकम भी बढ़ानी चाहिए। यह अपने प्यूरचर को और मजबूत बनाने का एक सबसे अच्छा तरीका है। हर साल अपने रिटायरमेंट

पोर्टफोलियो का रिव्यू जरूर करें और जरूरत के हिसाब से उसमें बदलाव करें। यदि आप सही प्लानिंग के साथ चलेंगे तो परेशानी नहीं होने और अपने लिए आसानी से अच्छा फंड जुटा पाएंगे। रिटायरमेंट के बाद आपको किसी का मुंह ताकने की जरूरत नहीं होगी। अपने खर्च खुद उठाने में सक्षम होंगे।

पूरी तैयारी के साथ होना चाहिए रिटायरमेंट

रिटायरमेंट का मकसद सिर्फ नौकरी खत्म होना नहीं है, बल्कि एक ऐसी ज़िंदगी जीना है, जिसमें आर्थिक चिंता न हो। अगर आप अपने करियर को बनाने में जितनी मेहनत करते हैं, उतनी ही एनर्जी अपने वित्तीय भविष्य को बनाने में भी लगाएं। रिटायरमेंट प्लानिंग को आज शुरू करना आपके कल को बेहतर बना सकता है। इसलिए यह समझना जरूरी है कि रिटायरमेंट की रेस में जीतने के लिए शुरुआत अभी से करनी होगी।

आखिरी वक्त में दौड़ने से मेजिल नहीं मिलती, बल्कि वक्त पर उठाना गया एक-एक कदम आपके आने वाले कल को बेहतर बनाने में बड़ा योगदान कर सकता है।



5 साल में 4 गुना रिटर्न, कम खर्च में तिहरा बेनिफिट दिया

5 स्टार रेटिंग, कम खर्च वाले टॉप 5 इक्विटी फंड्स में तीन एचडीएफसी म्यूचुअल फंड के	इन स्कीम्स ने 5 साल में 32% तक रिटर्न देकर निवेशकों की दौलत कई गुना तक कर दी	इन सभी फंड का एक्सपेंस रेशियो यानी निवेश का खर्च 1 फीसदी से भी काफी कम यानी फायदा
--	---	--

बिजनेस डेस्क। इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में पैसे लगाने वाले निवेशकों को हमेशा ऐसी स्कीम की तलाश रहती है, जिनकी रेटिंग अच्छी हो और जो कम से कम खर्च में हाई रिटर्न देने की क्षमता रखते हों। हम यहां ऐसे ही 5 इक्विटी फंड्स की जानकारी देने जा रहे हैं, जिन्हें 5 स्टार रेटिंग मिली हुई है और जो पिछले 5 साल में 32% तक एवरेज एनुअल रिटर्न दे चुके हैं। इतना ही नहीं, इन सभी फंड का एक्सपेंस रेशियो यानी निवेश का खर्च 1 फीसदी से भी काफी कम है। यानी इनमें निवेश करने वालों को बेस्ट रेटिंग, बेस्ट रिटर्न और कम खर्च का तिहरा बेनिफिट मिल रहा है। इन टॉप 5 में से तीन स्कीम्स एचडीएफसी म्यूचुअल फंड की हैं। ये सभी इक्विटी फंड, निवेश के मामले में पलेक्सिबल इनवेस्टमेंट स्ट्रेटजी पर चलते हैं। इस इनवेस्टमेंट स्ट्रेटजी में फंड मैनेजर लाज कैप, मिड कैप और स्मॉल कैप स्टॉक्स में फंड एलोकेशन अपनी मर्जी से तय करते हैं। इससे उन्हें बाजार के रुझान के हिसाब से एलोकेशन करके बेहतर रिटर्न हासिल करने का मौका मिलता है। साथ ही हर मार्केट सेगमेंट में निवेश करने की वजह से पोर्टफोलियो के डायवर्सिफिकेशन का लाभ भी मिलता है। जिन लोगों के पोर्टफोलियो में इक्विटी स्कीम्स की संख्या ज्यादा नहीं रहती उन्हें आम तौर पर एक ही स्कीम में बेहतर डायवर्सिफिकेशन के लिए ऐसे ही फंड्स में निवेश करने की सलाह दी जाती है।

पलेक्सिबल स्ट्रेटजी वाले टॉप इक्विटी फंड

हम यहां जिन टॉप 5 इक्विटी फंड्स की वॉर करने जा रहे हैं, वे सभी इसी पलेक्सिबल निवेश रणनीति की फॉलो करते हैं। दूरअसल, किसी भी मार्केट सेगमेंट को लीड स्टॉक्स में निवेश की छूट के कारण ही वैल्यू रिसर्च में एचडीएफसी फोकरड 30 फंड, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंडिया इक्विटी एफओएफ और एचडीएफसी रिटायरमेंट सेविंग्स फंड (इक्विटी प्लान) को भी पलेक्सि कैप फंड की लिस्ट में शामिल किया है। इस लिस्ट में परना पारोख प्लेक्सी कैप फंड और एचडीएफसी प्लेक्सी कैप फंड जैसी विशाल एसेट मैनेजमेंट वाली स्कीम्स भी शामिल हैं। इन सभी फंड्स को वैल्यू रिसर्च ने 5 स्टार रेटिंग दी गई है।

- 1. एचडीएफसी फोकरड 30 फंड (डायरेक्ट प्लान) एम.एस.**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न : 31.95%
 - 3 साल का औसत सालाना रिटर्न : 26.26%
 - एक्सपेंस रेशियो : 0.61%
 - एसेट अंडर मैनेजमेंट : 19,551 करोड़ रुपये
 - 1 लाख का निवेश 5 साल में हुआ : 4,00,361 रुपये
 - 10 हजार की मंथली SIP से 5 साल में जमा हुए : 11,62,044 रुपये
- 2. एचडीएफसी प्लेक्सी कैप फंड (डायरेक्ट प्लान)**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न : 31.22%
 - 3 साल का औसत सालाना रिटर्न : 25.41%
 - एक्सपेंस रेशियो : 0.73%
 - एसेट अंडर मैनेजमेंट : 75,724 करोड़ रुपये
 - 1 लाख का निवेश 5 साल में हुआ : 3,89,267 रुपये
 - 10 हजार की मंथली एसआईपी से 5 साल में जमा हुए : 11,30,375 रुपये
- 3. आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंडिया इक्विटी एफओएफ (डायरेक्ट प्लान)**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न : 30.54%
 - 3 साल का औसत सालाना रिटर्न : 23.09%

एकमुश्त और एसआईपी पर शानदार रिटर्न
ऊपर दिए ओंकों से साफ है कि इन पांचों म्यूचुअल फंड्स में पिछले 5 साल के दौरान अपने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिए हैं। फिर चाहे वो वन-टाइम इन्वेस्टमेंट हो या सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिये किया गया निवेश, लेकिन निवेशकों को यह याद रखना चाहिए कि इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश के साथ मार्केट रिस्क जुड़ा रहता है। इसलिए निवेश का फैसला करने से पहले अपनी रिस्क लेने की क्षमता को जरूर ध्यान में रखें।
(डिस्क्लेमर : इस आर्टिकल का मकसद सिर्फ जानकारी देना है। निवेश की सिफारिश करना नहीं। म्यूचुअल फंड्स का पिछला रिटर्न भविष्य में जारी रहने की कोई गारंटी नहीं होती। निवेश के फैसले अपने निवेश सलाहकार की राय लेकर ही करें।)

रिटायरमेंट के लिए निवेश विकल्प

पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड) : पीपीएफ एक लंबी अवधि का निवेश विकल्प है जो आयकर अधिनियम के तहत कर लाभ प्रदान करता है। एनपीएस (नेशनल पेंशन सिस्टम) : एनपीएस एक रिटायरमेंट बचत योजना है जो आपको अपने भविष्य के लिए कवव करने में मदद करती है। म्यूचुअल फंड : म्यूचुअल फंड एक प्रकार का निवेश विकल्प है जो आपको विभिन्न प्रकार की सिक्वोरिटीज में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है।
फिक्स्ड डिपॉजिट : फिक्स्ड डिपॉजिट एक प्रकार का निवेश विकल्प है जो आपको एक निश्चित अवधि के लिए अपने पैसे जमा करने का अवसर प्रदान करता है।
शेयर बाजार : शेयर बाजार एक प्रकार का निवेश विकल्प है जो आपको कंपनियों के शेयरों में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है। निवेश करने के लिए कुछ सुझाव
जल्दी शुरू करें : रिटायरमेंट के लिए निवेश करना जितनी जल्दी शुरू करेंगे, उतना ही अधिक समय आपके पैसे को बढ़ाने के लिए मिलेगा।
नियमित निवेश करें : नियमित निवेश करने से आपको अपने निवेश लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।
विविधीकरण करें : अपने निवेश को विभिन्न प्रकार की सिक्वोरिटीज में विभाजित करने से आपकी जोखिम को कम करने में मदद मिल सकती है।
अपने निवेश लक्ष्यों को परिभाषित करें : अपने निवेश लक्ष्यों को परिभाषित करने से आपको अपने निवेश निर्णयों को निर्दिष्ट करने में मदद मिल सकती है।

खबर संक्षेप



महम। सैमाण गांव के सतगुरु मंदिर में छबील लगाकर श्रद्धालुओं को जलजीरा बांटते डेरे के महंत डॉ. सतीश दास।

द्वादशी मेले पर भंडारा व छबील लगाई

महम। शनिवार को सतगुरु मंदिर सैमाण में द्वादशी पर मेला आयोजित किया गया। इस मेले में देश और प्रदेश के विभिन्न इलाकों से पहुंचे हजारों श्रद्धालुओं ने बाबा श्याम जी की पूजा अर्चना की। इस दौरान मंदिर में भंडारा और छबील लगाए। श्रद्धालुओं ने भंडारे में प्रसाद छका और छबील में श्रद्धालुओं व ग्रामीणों को जलजीरा की बातलें वितरित की गईं। मंदिर के महंत डॉ. सतीश दास ने दूर दराज से आए भक्तजनों को अपने हाथ से जलजीरा पिलाया। महंत ने श्रद्धालुओं को प्रसाद स्वरूप तुलसी की मालाएं भी भेंट की। मेले के दौरान मंदिर के सामने खिलौनों की स्टॉल लगाई गईं। श्रद्धालुओं के

बैठक में 9 जुलाई को होने वाली हड़ताल पर चर्चा

रोहतक। हरियाणा रोडवेज वर्कर्स यूनियन की राज्य कार्यकारिणी की एक बैठक शनिवार को सुखपुरा चौक स्थित कर्मचारी भवन में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता यूनियन के राज्य प्रधान नरेंद्र दिनोद ने की, जबकि संचालन महासचिव सुमेर सिवाच ने की। बैठक में 22 मई 2025 को चंडीगढ़ में सांझा मोर्चे के प्रतिनिधिमंडल और परिवहन महानिदेशक के बीच हुई बैठक में जिन मांगों पर सहमति बनी थी, उनकी समीक्षा विस्तार से की गई। यूनियन नेताओं ने सरकार पर आरोप लगाया कि बार-बार वार्ता होने और सहमति बनने के बावजूद मांगों का अब तक लागू नहीं किया गया 9 जुलाई को प्रस्तावित राष्ट्रव्यापी हड़ताल की तैयारियों को लेकर रणनीति बनाई।

एचडी पब्लिक स्कूल बहुअकबरपुर के होनहारों ने रचा इतिहास

हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

बहुअकबरपुर स्थित एचडी पब्लिक स्कूल के लिए यह अत्यंत गर्व का विषय है कि स्कूल की पूर्व छात्रा अन्नू सुहाग, (निवासी गांव डोभ) ने यूपीएसई द्वारा आयोजित सीडीएस की परीक्षा में ऑल इंडिया फर्स्ट रैंक प्राप्त कर संपूर्ण इलाके को गौरवान्वित किया है। स्कूल प्रशासन ने बताया कि अनु ने 27 से 31 मार्च 2025 तक बेंगलुरु में आयोजित एसएसबी इंटरव्यू सफलतापूर्वक पास किया और अब वह जल्द ही ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी चेन्नई में प्रशिक्षण प्राप्त करेगी। यह उपलब्धि उनके समर्पण, मेहनत और अनुशासन का प्रतीक है। अन्नू सुहाग की यह सफलता न केवल स्कूल बल्कि पूरे हरियाणा और देश के लिए गौरव की बात है। यह एचडी स्कूल

संचालित रिक्रेशर पादयक्रम के चौथे दिन के प्रथम सत्र में प्रतिभागियों को संबोधित किया

हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

साहित्य केवल समाज का प्रतिबिंब नहीं है, यह उसे दिशा देने, चुनौती देने और रूपांतरित करने का एक सशक्त मध्य है। इस वक्तव्य के साथ प्रो. सुखबीर सिंह शिक्षाविद, लेखक एवं डीन, स्कूल ऑफ बौद्ध अध्ययन, दर्शन एवं तुलनात्मक धर्म, नालंदा विश्वविद्यालय, बिहार ने महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय



स्थित मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र के अंतर्गत संचालित रिक्रेशर पादयक्रम के चौथे दिन के प्रथम सत्र में प्रतिभागियों को संबोधित किया। प्रो. सिंह ने

साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का संवाहक बताते हुए प्रतिभागियों से आग्रह किया कि वे अपने शोध कार्यों को समाज से जुड़ी साहित्यिक चुनौतियों पर केंद्रित

साहित्य और समाज के अंतर्संबंधों पर सोचने और शोध के लिए प्रोत्साहित करें

प्रो. सिंह ने शिक्षकों को प्रेरित किया कि वे विद्यार्थियों को भी साहित्य और समाज के अंतर्संबंधों पर सोचने और शोध के लिए प्रोत्साहित करें। उन्होंने भारतीय भक्ति साहित्य, दलित लेखन से लेकर अमेरिकी गृहयुद्ध कालीन साहित्य तक के उदाहरणों के माध्यम से साहित्य की ऐतिहासिक और सामाजिक भूमिका को स्पष्ट किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार की प्रमुख वैज्ञानिक प्रो. रेनु मुंजाल ने आज “सामुदाय आधारित अनुसंधान पद्धतियां” विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि बदलते जलवायु और कृषि परिदृश्य में सहभागी एवं सामुदायिक अनुसंधान पद्धतियां अत्यंत आवश्यक हैं, क्योंकि ये पद्धतियां स्थानीय समुदायों की सहभागिता के माध्यम से व्यावहारिक एवं स्थायी समाधान प्रदान करती हैं। प्रो. मुंजाल ने स्पष्ट किया कि परंपरागत शोध से नीचे अनुसंधान मॉडल अब अप्रभावी हो रहे हैं। इसके स्थान पर शोध को नीचे से ऊपर दृष्टिकोण के साथ, स्थानीय अनुभव, समस्याओं और समाधानों की ध्यान में रखकर डिजाइन करना होगा।

करें। उन्होंने कहा कि युवा शोधार्थियों को ऐसे विषयों पर कार्य करना चाहिए जो समाज की जटिलताओं को समझने और उनके समाधान की दिशा में सार्थक

योगदान दे सकें। प्रो. मुंजाल ने बताया कि इन पद्धतियों को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), मशीन लर्निंग, बिग डेटा एनालिटिक्स, जीआइएस,

रिमोट सेंसिंग और आइओटी जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। ये तकनीकें समुदायों की जरूरतों की सटीक पहचान, डेटा-संचालित निर्णय और

समाधान की निगरानी में सहायक हैं। प्रो. मुंजाल ने सहभागी अवलोकन, सामाजिक मानचित्रण, फोकस ग्रुप चर्चाएं और कार्यशालाओं जैसे उपकरणों की उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला और इन विधाओं को तकनीकी नवाचारों के साथ जोड़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर प्रो. मुनीष गर्ग, निदेशक यूजीसी-एमएमटीटीसी, एमडीयू, डॉ. माधुरी हड्डा, डॉ. शैली जैन, गुरु नानक गल्स कॉलेज, यमुनानगर एवं डॉ. नवजोत कौर, गणित विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ आदि मौजूद रहे।

भारी विरोध के चलते कुछ समय पहले तत्कालीन प्रधान जीबीएम छोड़ भागे थे कोषाध्यक्ष बोले- प्रधान तुरंत जीबीएम करें, जवाब -दबाव में नहीं होगी बैठक

हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के गैर शिक्षक कर्मचारी संघ के कोषाध्यक्ष डॉ. विजय पाल ने कहा कि हमारे प्रधान अनिल मल्होत्रा कर्मचारियों की मांगों को लेकर आयोजित की जाने वाली जनरल बॉडी मीटिंग(जीबीएम) की पर दस दिन में भी निर्णय नहीं कर पाए हैं। इसलिए अब कर्मचारी उनको लेकर कोई ठोस रणनीति जल्द ही बनाएंगे। पाल ने कहा कि प्रधान कर्मचारियों के लिए चुना जाता है ना कि यूनिवर्सिटी प्रशासन के लिए। कर्मचारियों ने जो विश्वास मल्होत्रा पर वोट देकर दिया था, वह उस पर खरा उतरने की बात दूर की कौड़ी है, उसके पास से भी नहीं फटके। इधर प्रधान अनिल मल्होत्रा ने कहा कि विजयपाल के दबाव में आकर मीटिंग किसी भी सूरत में होगी

वर्तमान कार्यकारिणी के सात महीने पूरे

विजयपाल ने कहा कि गत 28 मई को प्रधान अनिल मल्होत्रा से जनरल बॉडी मीटिंग करवाने के लिए निवेदन किया गया था, जिस पर नियमानुसार 10 दिन के अंदर प्रधान को फेसला लेना था। पर प्रधान ने जनरल बॉडी मीटिंग करवाने के बजाए इधर-उधर की बातें करने लगे हैं। पाल ने बताया कि इलेक्शन के समय प्रधान द्वारा मांगों और मुद्दों को लेकर कर्मचारियों से बड़े बड़े दावे और वादे किए थे। जो आज 7 महीने के कार्यकाल बीत जाने के बाद भी धरातल पर उतर नहीं पाए हैं। जिस वजह से उनके पास कर्मचारियों को जवाब देने के लिए कुछ ख़ास नहीं है।



चार महीने शेष हैं चुनाव में

अक्टूबर में संघ की नई कार्यकारिणी का चुनाव होगा है। ऐसे में कर्मचारी मांगों को लेकर उतावले हैं। कर्मचारियों का जो वादस्अप गुप्त में है, उसमें लगातार प्रधान से कर्मी सवाल कर रहे हैं। कुछ सवाल के जवाब प्रधान देते हैं तो कुछ नहीं। दिनभर प्रधान पर सवालों की झड़ी लगी रहती है। और कर्मचारी इसी वजह से संघ के कोषाध्यक्ष विजय पाल धनखड़ जनरल बॉडी की मीटिंग करवाने की मांग कर रहे हैं। धनखड़ चाहते हैं कि प्रधान कर्मचारियों से स्बखरू होकर उनके सवालों के जवाब दें। ताकि कर्मचारी आमने-सामने सही सही बात मांगों को लेकर हो।

नहीं। 10 जून को वीसी के आते ही मांगपत्र उन्हें सौंप दिया जाएगा। जनरल बॉडी के बारे में जानें संघ के लिए जनरल बॉडी की मीटिंग

काफ़ी बड़ा महत्व रखती है। क्योंकि जनरल बॉडी में विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन के मैन गेट पर आकर प्रधान



दबाव में नहीं होगी बैठक



विश्वविद्यालय रोहतक

खास बातें

- मामला एमडीयू गैर शिक्षक कर्मचारी संघ की मांगों का
- कई दिन से दो पदाधिकारियों में रा

कर्मचारियों के सामने आकर बताता है कि उन्होंने कौन-कौन से कार्य कर्मचारी हित में प्रशासन से

करवाए हैं। ध्यान रहे कि कुछ समय पहले ही संघ के एक प्रधान गेट पर आयोजित जनरल बॉडी की मीटिंग से भाग गए थे। भागना की वजह थी कि प्रधान जो तर्क मांगों और दूसरे मुद्दों को लेकर कर्मचारियों को दे रहे थे, उनमें काफी विरोधाभास था। कर्मचारियों से ये सहन नहीं हुआ तो प्रधान को कहा कि वे अपने अंतरमन में झांक कर देख लें कि वे क्या कह रहे और जमीनी हकीकत क्या है।



रोहतक। बाबा खाटू नरेश के आयोजन में मौजूद अतिथि व आयोजक।

ककराना में बुधवार का पगड़ी पहनाकर स्वागत

हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

गांव ककराना में बाबा खाटू नरेश का जागरण एवं भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें सुनारिया से नवनियुक्त प्रधान जयकुमार बुधवार ने अपने साथियों के साथ शिरकत की। वहां पहुंचने पर ककराना वासियों ने प्रधान का फूलमाला एवं सम्मान का प्रतीक पगड़ी पहनकर स्वागत किया। उन्होंने कहा कि ऐसे शुभ अवसरों पर एक दूसरे से

मिलकर भाईचारा बढ़ता है, ऐसे कार्यक्रमों में मिलजुल कर सहयोग करना चाहिए। इस मौके पर पंडित लखीचंद के पुत्र विष्णु दत्त शर्मा ने धार्मिक गीत प्रस्तुत किया। जयकुमार बुधवार ने विष्णु दत्त शर्मा का फूलमालाओं एवं पगड़ी से सम्मान किया। अवसर पर रामवीर पहलवान राके (थांबू), सतवीर शर्मा, हरिओम शर्मा, राम दिया, सतवीर प्रधान, साधुराम, राकेश सरपंच, ममफुल नंबरदार आदि रहे।

जीवन में सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं : महेश भारद्वाज

- !अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं है, यह बात जिला सूचना एवं विज्ञान अधिकारी महेश भारद्वाज ने अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा पावर हाउस चौक स्थित हारटोन स्किल सेंटर पर आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में कही। महेश भारद्वाज ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप स्वयं से प्रश्न करें, क्या आप अपनी तैयारी से संतुष्ट हैं यदि आपका मन संतुष्ट है तो आपकी सफलता निश्चित है। गीतकार वीरेंद्र मथुर ने अपने गीत के माध्यम से युवा शक्ति को नशे से दूर रहने का संदेश दिया। डॉ अंजू शर्मा ने समाज में



रोहतक। विद्यार्थियों को सम्मानित करते डॉ आशुतोष कौशिक। फोटो: हरिभूमि

महिलाओं के योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज कोई भी ऐसा कार्य नहीं जहां महिला अपना योगदान नहीं दे रही है। प्रतिभा सम्मान समारोह में हारटोन स्किल सेंटर से मैनेजर मनु शर्मा ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। मंच संचालन डॉ आशुतोष कौशिक, महामंत्री अखिल भारतीय साहित्य परिषद ने किया। डॉ आशुतोष

कौशिक ने बताया कि 12वीं कक्षा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। जिनमें रीना, लक्षित, हर्ष, महिमा, हिमानी, टिकू, तनीषा, मानशी, सुहाना, साहिल, कुणाल आदि शामिल रहे। इस अवसर पर श्रीभगवान भारद्वाज, रिकू हड्डा, संदीप कुमार, दीपिका, पूजा, आकाश शर्मा, विद्यानंद, कुणाल, लक्ष्मी नारायण शर्मा आदि रहे।

योग शिविर मे बेटियों की शिक्षा-सुरक्षा पर दिया जोर

योग शारीरिक और मानसिक संतुलन के साथ आत्मविकास और उन्नति का साधन : पूनम

हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

सार्वदेशिक आर्या युवती परिषद एवं बेटी बचाओ अभियान के संयुक्त तत्वावधान मे स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटोली के प्रांगण में आयोजित राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर मे बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि योग न केवल शारीरिक और मानसिक संतुलन का माध्यम है, अपितु यह आत्मविकास और उन्नति का सशक्त साधन भी है। उन्होंने बालिकाओं को नियमित रूप से योग अपनाने तथा अनुशासित जीवन शैली के माध्यम से आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर होने का संदेश दिया। जिला बाल एवं महिला संरक्षण अधिकारी करमिंदर कौर ने राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग



शिविर में सहभागिता करते हुए महिलाओं और बालिकाओं के अधिकारों संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी साझा की तथा उपस्थित बालिकाओं को उनके अधिकार एवं सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया। सार्वदेशिक आर्या युवती परिषद की प्रदेश अध्यक्ष कुमारी मुकेश आर्या ने कहा कि कृषि दयानंद सरस्वती वह प्रथम महापुरुष थे, जिन्होंने भारतीय समाज में महिलाओं के अधिकारों

की पुरजोर वकालत की। उन्होंने वेदों के आधार पर नारी को शिक्षा, स्वतंत्रता एवं सम्मान का अधिकार दिलाने का अभियान चलाया, जिसकी प्रेरणा आज भी समाज सुधार के आंदोलनों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भजनोंपदेशिका कल्याणी आर्या ने बालिकाओं से वैदिक आदर्शों पर चलते हुए आत्मनिर्भर और सशक्त बनने का आह्वान किया। करिमंदर कौर के सामने बच्चों ने योग प्रदर्शन करके



दिखाया। उन्होंने सभी बच्चों को शुभकामनाएं दीं। शिविर में मुख्य प्रशिक्षण एकता आर्या, पूनम आर्या, सोनिया, पूजा, अंकिता आर्या, अंतिम आर्या, प्रीति आर्या, कविता आर्या, निधि आर्या आदि की टीम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जोकि सर्वगोसुंदर व्यायाम, जूडो, कराटे, स्नूप निर्माण, भारतीय व्यायाम आदि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

ग्रीष्मकालीन शिविर का हुआ समापन



हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

जीडी गोयनका डॉडलर हाउस में 26 मई से 7 जून तक ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्या अनामिका बलहारा ने बच्चों को प्रमाणपत्र और पुरस्कार प्रदान किये। जिसमें उन्हें रोबोटिक के प्रमाणपत्र, ग्रीष्मकालीन शिविर में भाग लेने के प्रमाण पत्र और पुरस्कार दिए गए। अनामिका ने बताया कि बच्चों को पुरस्कार और प्रमाणपत्र देने का उद्देश्य बच्चों का मनोबल बढ़ाना है ताकि बच्चे ज्यादा से ज्यादा

भविष्य में भी इस प्रकार के शिविरों में और विद्यालय द्वार आयोजित की जाने वाली अन्य गतिविधियों में भी भाग ले सकें। उन्होंने कहा कि छात्रों के लिए प्रमाण पत्र और उपहार महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि वे उन्हें प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्हें यह एहसास कराते है कि उनकी मेहनत और प्रयास मूल्यवान हैं। अनामिका ने बताया कि जीडी गोयनका डॉडलर हाउस समय समय पर बच्चों के लिये कई प्रकार की गतिविधियां आयोजित करता है।

गुल्क और कौम की तरक्की की दुआ को अल्लाह के सजदे में उठे हजारों हाथ



रोहतक। जीद रोड स्थित नूरानी मस्जिद, किला रोड मस्जिद व चमेली मार्केट शीशे वाली मस्जिद में बकरीद पर नमाज अदा करते हुए मुस्लिम समुदाय के लोग।

मानसरोवर हॉस्पिटल

REQUIRES

❖ BAMS	6
❖ PRO	5
❖ RMO	5

नजदीक पी.एन.वी. बैंक, विकास नगर के सामने, सोनीपत रोड, रोहतक
Tel. :- +91-1262-253500 Mobile: 9254302848, 9053005599

ख़बर संक्षेप

सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों के विकास पर ध्यान दे रही सरकार

रोहतक। केंद्र सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों के विकास के लिए एक उल्लेखनीय कदम है। उपायुक्त धर्मेन्द्र सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व वाली हरियाणा सरकार राज्य में सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों के विकास के लिए विशेष ध्यान केंद्रित कर रही है।

फरमाणा बिजली घर से आज बिजली आपूर्ति बाधित रहेगी

महम। रविवार 8 जून को फरमाणा गांव स्थित बिजली घर में मम्मत का काम किया जाएगा। जिस वजह से फरमाणा बिजली घर से होने वाली बिजली आपूर्ति बाधित रहेगी। बिजली वितरण निगम के उप मंडल अधिकारी आपरेशन ने बताया कि पावर स्टेशन जनरल मेंटेनेंस का कार्य किया जाएगा। इसके कारण लाइट सप्लाई सुबह 8 से सुबह 10 बजे तक बाधित रहेगी। इसमें 11 केवी फ़रमाणा डीएस, 11 केवी ओल्ड बैसी डीएस व आईटीआई सहित 11 केवी सैमाण, 11 केवी फ़रमाणा एपी व 11 केवी बेडवा डीएस शामिल हैं।

हमले के मामले में आरोपी गिरफ्तार

रोहतक। पुलिस ने बहु अकबरपुर के युवकों पर हुए हमले में आरोपी देवेन्द्र को गिरफ्तार किया गया। थाना प्रभारी नीरज कुमार ने बताया कि रविंद्र की शिकायत पर केस दर्ज किया था। जांच में सामने आया कि रविंद्र व रविंद्र का भाई अजय खेतीबाड़ी का काम करता है। 3 जून को रविंद्र का पड़ोसी विनोद खेत में आया व अजय व रविंद्र पर फायर कर दिया।

पीजीआई में किया हवन, आज हड़ताल नहीं करेंगे कर्मचारी



रोहतक। पिछले 6 दिनों से लगातार अनुबंध कर्मचारी हेल्थ केयर रोहतक संगठन व अनुबंध कर्मचारी पीडित एसोसिएशन पीजीआई एमएस रोहतक के बैनर तले चल रही हड़ताल के छठे दिन आज कर्मचारियों ने हवन यज्ञ कर भंडारे का आयोजन किया। कर्मचारियों ने बताया कि रविवार को हड़ती के दिन कर्मचारी हड़ताल नहीं करेंगे। हवन यज्ञ में आहुति डालते हुए हड़तालरत समस्त कर्मचारियों ने भगवान प्रार्थना की कि पीजीआई प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों को

हरिभूमि न्यूज़ ►► रोहतक

नगर निगम अब शहर में साफ-सफाई और सीवर व्यवस्था को लेकर सख्त हो गया है। शनिवार को नगर निगम की टीम ने माल गोदाम रोड पर निरीक्षण किया और नियमों का उल्लंघन करने वाले तीन डेयरी संचालकों के 30 हजार रुपये का चालान किया गया।

आयुक्त ने स्पष्ट किया कि अब ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई की जाएगी और लगातार निरीक्षण किए जाएंगे ताकि स्वच्छता व्यवस्था बाधित न हो। निगम का प्रयास है कि

जल्द से जल्द डेयरियों को कन्हेली में शिफ्ट किया जाए। गौरतलब है कि शहर में चल रही सैकड़ों डेयरियों की वजह से गोबर सीवर व नालों में बह रहा है। इसकी वजह से गंदा पानी सड़कों, गलियों में जमा हो जाता है। लोगों को आने जाने में असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। निगम की तरफ से कई बार चेतावनी के साथ-साथ नोटिस भी दिए गए हैं। लेकिन डेयरी संचालक नहीं मान रहे। नगर निगम द्वारा नालों की सफाई का कार्य भी तेजी से किया जा रहा है। माल गोदाम रोड, शिवाजी कॉलोनी, डूंगी



रोहतक। डेयरी संचालक का चालान काटते नगर निगम टीम।



नालों की सफाई करते कर्मचारी।

गोहरी, सुनारिया चौक से भिवानी चुंगी तक, कच्चा बेरी रोड सहित विभिन्न स्थानों पर नालों की सफाई

करवाई गई। निरीक्षण अभियान के दौरान मुख्य सफाई निरीक्षक सचिन, सहायक निरीक्षक नरेंद्र,

अपील के बावजूद सुधार नहीं रहे संचालक

माल गोदाम रोड क्षेत्र में डेयरी संचालकों द्वारा नालों व सीवर में गोबर बहाने की लगातार शिकायतें मिल रही थीं। पहले अपील के बावजूद जब स्थिति में सुधार नहीं हुआ, तो निगम ने कार्रवाई का निर्णय लिया। डेयरी संचालकों को पहले ही चेतावनी दी जा चुकी थी कि वे नालों और सीवर में गोबर न बहाएं, क्योंकि इससे सीवर जाम हो जाते हैं और आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। लेकिन कुछ संचालकों द्वारा नियमों की अनदेखी जारी रखी गई। जिसकी वजह से चालान करते पड़े।

डॉ. आनंद कुमार शर्मा, नगर निगम आयुक्त

निगम ने आमजन से भी अपील की है कि वे स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग करें और किसी भी प्रकार की गंदगी फैलाने से बचें। निगम द्वारा यह अभियान भविष्य में भी जारी रहेगा।

बहु अकबरपुर में 15 करोड़ की हर घर जल परियोजना का शुभारंभ, 50 एचपी मोटरों से होगी पेयजल आपूर्ति

15 हजार की आबादी को मिलेगा लाभ, पानी की किल्लत से राहत

■ मोखरा मंडल अध्यक्ष मुकेश वशिष्ठ ने किया अनावरण

हरिभूमि न्यूज़ ►► रोहतक

गांव बहु अकबरपुर में हरियाणा सरकार की महत्वाकांक्षी 'हर घर जल योजना' के तहत 15 करोड़ की लागत से बन रही एक बड़ी जलापूर्ति परियोजना पर काम तेजी से चल रहा है। इसी कड़ी में मोखरा मंडल अध्यक्ष मुकेश वशिष्ठ ने दो 50-50 हॉस्पावर क्षमता की मोटरों का विधिवत उद्घाटन किया। इन मोटरों के लगने से गांव में लंबे समय से चली आ रही पानी की समस्या का स्थायी समाधान होने की उम्मीद है। इससे करीब 15 हजार आबादी वाले बहुअकबरपुर गांव के लोगों को पर्याप्त पानी मिल सकेगा।



रोहतक। हॉस्पावर क्षमता की मोटरों को शुरू करते हुए ग्रामीण एवं प्रधान।

मुकेश वशिष्ठ ने बताया कि शुरुआत में यहां 40-40 एचपी की मोटरें लगाने की योजना थी, जो गांव की बढ़ती जल आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं थीं। उन्होंने कहा कि गांव में पानी की किल्लत एक

20 वर्षों से पानी खरीदने की समस्या का अंत

ग्रामीण राकेश प्रधान ने इस परियोजना के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि पिछले 20 वर्षों से बहु अकबरपुर गांव में हर महीने 12 से 15 लाख तक का पानी बाहर से खरीदा जा रहा था। यह एक बड़ी आर्थिक और सामाजिक समस्या थी। जब यह गंभीर मुद्दा सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया गया, तो वर्ष 2023 में एक नया वाटर बूटल स्टेशन स्वीकृत किया गया, जिससे गांव के लगभग एक-चौथाई हिस्से में पानी की आपूर्ति शुरू हो सकी। इसके अतिरिक्त, 15 करोड़ की एक व्यापक योजना को भी मंजूरी दी गई है। इस परियोजना के तहत गांव में 20 किलोमीटर लंबे पाइपलाइन बिछाई जा रही हैं और पुराने, क्षतिग्रस्त तालाबों को 2 से 3 फीट तक ऊंचा करके उनका नए सिरे से पुनर्निर्माण किया जा रहा है। इस परियोजना के पूरी होने के बाद, गांव को जल आपूर्ति के लिए बाहर से पानी खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, जिससे सालाना लगभग 1.80 करोड़ की बड़ी बचत होगी।

एचपी की मोटरें स्थापित की गई हैं, जिससे गांव में पर्याप्त जल आपूर्ति सुनिश्चित हो सकेगी। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि भाजपा सरकार की हर घर तक पानी पहुंचाने की प्रतिबद्धता अब जमीनी स्तर पर

साकार हो रही है। इस उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान ब्लॉक समिति मेंबर वीरेंद्र, मनोज बल्हारा, समाजसेवी पवन बल्हारा, दीपक, कुलदीप, राहुल पंडित, अनिल बल्हारा, जितू मौजूद रहे।

अधिकारियों ने मदीना में सुनी किसानों की समस्याएं

महम। मदीना गांव में कॉ ऑप्ट्रेविट बैंक के पास वाली चोपाल में शनिवार शाम को चार बजे सिंचाई विभाग की काडा विंग के अधिकारियों ने किसानों की समस्याएं सुनीं। किसानों ने कार्यकारी अभियंता अंशुल कादयान को खेतों की सिंचाई के दौरान कच्चे खालों की वजह से आने वाली परेशानियों के बारे में बताया। बताया कि बहुत से ऐसे कच्चे नाले हैं, जिनकी वजह से खेतों की नहरी पानी से सिंचाई ठीक से नहीं हो पाती। किसानों ने कहा कि कच्चे खाल पक्के किए जाएं, ताकि खेतों की सिंचाई ठीक से हो जाए और नहरी पानी की बर्बादी को रोका जा सके। एक्सईएन अंशुल कादयान ने किसानों को खाल पक्के करवाने का आश्वासन दिया। ग्रामीणों ने सिंचाई विभाग की टीम के सदस्यों का फूल माला पहनाकर स्वागत किया। मेरा गांव मेरी शान संगठन की ओर से उनको स्मृति चिन्ह भी भेंट किया गया।



महम। सिंचाई विभाग के अधिकारियों को स्मृति चिन्ह प्रदान करते मदीना के ग्रामीण।



रोहतक। पीजीआईएमएस में चल रही हड़ताल के विरोध में अब दूसरे कर्मचारी खुलकर सामने आ गए हैं। दो दिन पहले प्रदर्शन करके हड़ताल का विरोध किया था, अब शनिवार को भंडारा लगाकर हड़ताल का विरोध किया। पीजीआई कैपस में कर्मचारियों ने भंडारा लगाया और मोठा पानी मरीजों के तीमारदारों को पिलाया। कर्मचारी आशा प्रेम, हेमंत, संजीत, मोहित ने बताया कि यह भंडारा इसलिए लगाया है कि हड़ताल कर रहे लोगों को सबुद्धि आए और पीजीआई बर्बाद होने से

बच जाए। कर्मचारी सुदेश, अनु, रति, भाई, गौरव, साहिल, राजा अजय, दीपांशु आदि ने कहा कि कुलपाति डॉ. एच के अग्रवाल ने गत दिवस खुद कहा है कि कर्मचारियों को एचकेआरएन में शामिल करने के लिए सरकार को लिख दिया है, लेकिन अब भी हड़ताल क्यों कर रहे हैं, यह समझ से परे है। अब डायरेक्टर से मिलकर ऐसे लोगों पर कार्रवाई की मांग करेंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि हड़ताल में बाहरी लोग शामिल हैं और पीजीआई को कार्रवाई करनी चाहिए।

प्रधान मंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का लाभ लें लोग : उपायुक्त

उपायुक्त धर्मेन्द्र सिंह ने जिला वासियों से सरकार की प्रधान मंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का लाभ उठाने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि यह योजना देशवासियों को स्वच्छ और सस्ती ऊर्जा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू की गई है। योजना के अंतर्गत पात्र लाभार्थियों को अपने घरों की छतों पर सोलर पैनल लगाने की सुविधा प्रदान की जा रही है, जिससे उन्हें मुफ्त बिजली प्राप्त होगी। उपायुक्त ने बताया कि इच्छुक नागरिक योजना संबंधित आवश्यक जानकारियां ले सकता है और पोर्टल पर जाकर इस योजना के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार की ओर से सब्सिडी एवं तकनीकी सहायता भी प्रदान की जाएगी। उन्होंने योजना के मुख्य बिंदुओं के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इस योजना के माध्यम से मुफ्त बिजली और आर्थिक बचत होगी। इस योजना के तहत प्रत्येक परिवार को हर महीने 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली प्राप्त होगी, जिससे प्रति वर्ष लगभग

15,000-18,000 रुपये की बचत होगी। साथ ही, अतिरिक्त बिजली को बिजली वितरण कंपनियों को बेचकर परिवार आय भी अर्जित कर सकते हैं।

केंद्र सरकार द्वारा भी सब्सिडी दी जाएगी

धर्मेन्द्र सिंह ने कहा कि इसके लिए केंद्र सरकार द्वारा भी सब्सिडी दी जाएगी। सरकार सोलर पैनल स्थापना के लिए सब्सिडी प्रदान करती है। 1 किलोवाट सिस्टम के लिए 30,000 रुपये, 2 किलोवाट के लिए 60,000 रुपये और 3 किलोवाट या अधिक के लिए 78,000 रुपये तक की सब्सिडी उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त, सस्ते ब्याज दरें पर बैंक ऋण की सुविधा भी दी जा रही है। योजना सौर ऊर्जा को बढ़ावा देकर कार्बन उत्सर्जन को कम करने में योगदान देगी।



उपायुक्त धर्मेन्द्र सिंह

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक

ऑफिस नं. : 9253681019-20,

फोन : 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है

मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश

आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुगम हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 से.मी	स्थायी संस्करण के	छ. 2500/-
10 X 8 से.मी	अन्य के पृष्ठ पर	छ. 3000/-

+5% GST Extra

नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए काटें 2रं लागू।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

हिंदी कार्यालय : हरिभूमि, कृषि विज्ञान केंद्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9989593400

मुख्य कार्यालय : हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20

गांव इंद्रगढ़ में संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम का आयोजन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लिख रहे हैं नए भारत की नई विकास गाथा : जांगड़ा

■ दुनिया का सबसे ऊंचा चिनाब रेलवे ब्रिज कश्मीर को उपहार

हरिभूमि न्यूज़ ►► महम

राज्य सभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा आज प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी सरकार के 11 साल की उपलब्धियों पर चर्चा करने के लिए संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम में महम हलके के गांव इंद्रगढ़ पहुंचे। सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने कहा की प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी विकसित भारत यात्रा में विकास की एक नई गाथा लिख रहे हैं। कल ही उन्होंने कश्मीर में संसार के सबसे ऊंचे चिनाब रेलवे ब्रिज का लोकार्पण किया और उसे जनता को समर्पित किया। जो विकसित भारत संकल्प यात्रा में मील का पत्थर साबित होगी। ऑप्रेशन सिंदूर के बाद पूरे विश्व ने देख लिया प्रधानमन्त्री मोदी के नेतृत्व में हमने चंद्रमा की यात्रा सफलतापूर्वक पूरी



महम। संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम में ग्रामीणों को संबोधित करते रामचंद्र जांगड़ा व उनके साथ मौजूद अन्य भाजपा कार्यकर्ता।

की। हर क्षेत्र में विकास के नये आयाम लिखे जा रहे हैं। कृषि क्षेत्र में किसानों के लिए पौने दो लाख करोड़ सम्मान निधि के तौर पर सीधे खातों में जमा कराए। रक्षा क्षेत्र में आज मिसाइल एयर डिफेंस के सारे उपकरण हेली कॉप्टर जिनका भारत में ही निर्माण होने लगा। सांसद ने कहा की प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज भारत विश्व

की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने कहा की मुख्यमंत्री नायब सैनी भी नॉन स्टॉप हरियाणा के मंत्र के साथ 24 घण्टे जनता की सेवा में तत्पर हैं। वे कभी महम हलके के विकास कार्यों के लिए कभी मना नहीं करते। विकास परियोजनाओं को तुरंत मंजूरी दे देते हैं। सांसद ने आज गांव इंद्रगढ़ में बहुत पुरानी मांग को पूरा

करते हुए सांसद निधि से 27 लाख की लागत से सामान्य चोपाल शिलान्यास किया। इस मौके पर महंत सतीश दास, भाजपा के मंडल अध्यक्ष अमित चौहान, युवा नेता हरिओम कौशिक, विनोद मंगली, रामराजेश शर्मा, तेज सिंह परमार, महिपाल इंद्रगढ़ व सुबेदार भरत सिंह समेत कई भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

भगत सिंह विचार समिति ने एमडीयू में किया पौधारोपण



हरिभूमि न्यूज़ ►► रोहतक

भगत सिंह विचार समिति के संस्थापक, लेखक, विचारक, एवं पूर्व सरपंच समचाना सुखबीर सिंह की याद में शनिवार को महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय प्रांगण में पौधारोपण किया गया। इस मौके पर भगत सिंह विचार समिति के अध्यक्ष एवं महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय कर्मचारी संघ के पूर्व प्रधान रणधीर कटारिया ने बताया की सुखबीर सिंह हमेशा युवाओं के प्रेरणा स्रोत रहे। वह अपने जीवन काल में हमेशा सामाजिक कार्यों में बद्ध-चढ़कर भाग लेते थे हमारी भी जिम्मेदारी बनती है कि उनके बताए रास्ते पर हम चले आज उसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए उनकी याद में पौधारोपण के कार्यक्रम का आयोजन किया

जागरूक करना होगा

समिति सदस्य संजय देशवाल ने कहा पर्यावरण संरक्षण के सजज प्रहरी के तौर पर समाज में जागरूकता के लिए काम करना होगा। महासचिव अतुल कौशिक ने कहा पौधारोपण जैसे कार्यक्रम चला कर धरती को बचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का आवाहन किया। एडवोकेट पवन ने कहा कि सुखबीर सिंह समचाना द्वारा शुरू किए गए सामाजिक कार्यों को गवत सिंह विचार समिति जिस तरह से आगे बढ़ा रही है यह सराहनीय है।

गया है कटारिया ने बताया कि आज पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने और प्रदूषण से कैसे बचा जाए यह संदेश जन-जन तक पहुंचाने की जरूरत है।



कवर स्टोरी/ डॉ. मोनिका शर्मा

जो से बदलते इस दौर में नई सोच ही नहीं न्यू एज स्किल्स भी आवश्यक हैं। आज के युवाओं को सेल्फ डेवलपमेंट की सोच में व्यक्तिगत ही नहीं कौशल को भी रखना होगा।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम का अनुमान है कि 2030 तक 85 फीसदी ऐसी नौकरियां मौजूद होंगी, जो बिल्कुल नए क्षेत्रों से जुड़ी होंगी। यानी, रोजगार के ऐसे फील्ड और अवसर, जो अभी तक अस्तित्व में नहीं हैं। इसलिए युवाओं में एडॉप्टिबिलिटी और नया सीखने की सोच जरूरी है। देखने में आ रहा है कि सरकारी और कंपनियां भी निरंतर कौशल विकास की जरूरत पर बल दे रही हैं। असल में तकनीकी तरक्की और कॉर्पोरेट दुनिया के तेजी से बदलते परिवेश में नए लोगों को ही नहीं पहले से जुड़े कर्मचारियों को भी लगातार नई स्किल सीखनी जरूरी है।

बदलते हालातों से तालमेल

बदलाव के प्रति खुला रुख और बदलती परिस्थितियों के साथ तालमेल बैठाने की सोच आज के समय में बहुत आवश्यक है। एडॉप्टिबिलिटी से जुड़ा यह भाव वह सॉफ्ट स्किल है, जिस पर सीखने-समझने की लगातार चलने वाली प्रक्रिया टिकी होती है। असल में एडॉप्टिबिलिटी का मतलब

समय तेजी से बदल रहा है। हर रोज तकनीक नए अवतार में सामने आ रही है। जाहिर है, ऐसे में सर्वाइव करने और यो करने के लिए खुद को लगातार अपडेट करना जरूरी है। अच्छी बात है कि इस बात की महत्ता को समझते हुए आज के युवा अपनी स्किल्स डेवलपमेंट के लिए लगातार प्रयासरत हैं।

युवा नई स्किल्स सीखकर लगातार हो रहे अपडेट

ही नई परिस्थितियों के लिए खुद को तैयार रखना है। बदलती स्थितियों के साथ आसानी से ढलने की क्षमता जुटाना है। बदलाव के लिए लचीला रख रखना है। तकनीकी दुनिया में एआई से लेकर प्रोफेशनल वर्ल्ड में लोगों से जुड़ाव की राह चुनने तक, पेशेवर दुनिया में नित नया सीखते रहने की प्रवृत्ति आज के समय की जरूरत है। आज टेक्नोलॉजी, इंटरस्ट्रीज, सर्विस सेक्टर हर फ्रंट पर बदलाव आ रहा है। काम-काजी दुनिया की बदलती अपेक्षाओं के अनुरूप ढलना जरूरी है। स्किल्स और माइंडसेट के मोर्चे पर स्वयं को संवतारे रहने से ही अपडेट रहा जा सकता है। सुखद है कि युवा अपनी स्किल को निखारने को प्राथमिकता भी दे रहे हैं।

मिलते हैं अनेक फायदे

उम्र के हर पड़ाव पर ही कुछ नया सीखना या सीखते रहना आत्मविश्वास की सीगात देता है। बात जब काम-काजी दुनिया में अपनी जमीन पुख्ता करने में जुटे युवाओं की हो तो, यह पहलू और अहम हो जाता है। असल में अपनी स्किल्स

निखारने से जाँब में सुरक्षा मिलती है। किसी क्षेत्र विशेष में पहचान बनाने का अवसर मिलता है। मौजूदा नौकरी में तो आगे बढ़ने के अवसर मिलते ही हैं, करियर के नए दरवाजे भी खुलते हैं। मानसिक रूप से यह स्थिति तनाव से भी दूर रखती है, क्योंकि आने वाले समय के लिए खुद को तैयार करने के प्रयास हर तरह की असुरक्षा से दूर रखते हैं। नई स्किल्स सीखने से हर इंसान को अपने आप के बारे में अच्छी और सकारात्मक अनुभूति होती है। अपनी क्षमता के प्रति बने विश्वास से मन अधिक सशक्त महसूस करता है। काम-काजी दुनिया में इस मन-स्थिति के साथ

चुनौतियों का सामना करना और आसान हो जाता है। नए स्किल्स सीखने से नए लक्ष्य बनाने और पाने की भी हिम्मत मिलती है। परिस्थितियों के अनुसार कौशल निखार से मिला आत्मविश्वास अनमोल होता है। ऐसे भरोसे से लंबेज मन-मस्तिष्क, हर हाल में कुछ बेहतर करने का मार्ग खोज लेता है। समझना मुश्किल नहीं कि फील्ड चाहे कोई भी हो, योग्यता के मोर्चे पर बेहतरी की ओर बढ़ते जाना कभी व्यर्थ नहीं जाता। *



डेवलप होती है पर्सनालिटी

फॉर्मल डिग्री के बाद भी कुछ नया सीखते रहना व्यक्तिगत विकास में भी सहायक होता है। नए स्किल्स सीखना अपने ज्ञान को बढ़ाना है। अपनी कार्यक्षमता को बेहतर करना है। समय के साथ चलते रहने की सोच को सही दिशा देना है। खासकर सॉफ्ट स्किल्स को बेहतर करना अच्छी निर्णय क्षमता, प्रभावी कम्युनिकेशन और समस्याओं का समाधान तलाशने में मददगार साबित होता है। ऐसे सभी पहलू व्यक्तिगत विकास से ही जुड़े होते हैं। यही बातें युवाओं की पर्सनालिटी को इंप्रेसिव बनाती हैं। अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के अनुसार, व्यक्ति की पर्सनालिटी उसके स्थाई व्यवहार, विचार, इमोशनल पैटर्न और क्षमताओं को लिए होती है। कॉगनिटिव बिहेवोरियल थेरेपिस्ट और 'द फील गुड जर्नल' के लेखक लुडोविका कोलेला के मुताबिक 'व्यक्तिगत व्यवहार और विचार पैटर्न का एक संयोजन होता है, जो समय के साथ अपेक्षाकृत स्थिर होता जाता है।' ऐसे में पर्सनल ग्रोथ और पर्सनालिटी डेवलपमेंट, दोनों ही सिस्टमेटिक ढंग से कुछ ना कुछ सीखते रहने से गहराई से जुड़े हैं। साथ ही खुद को सक्रिय रखने के लिए भी न्यू स्किल्स सीखना आवश्यक है। इस तरह नया स्किल, वर्किंग फील्ड में तो बेहतरी से जुड़ा ही है, युवाओं के व्यक्तिगत विकास का भी अहम पहलू है।



लाइफस्टाइल शैलेट सिंह

कि सी ने सच ही कहा है, चलती का नाम जिंदगी है। लेकिन कभी-कभी अपनी जिंदगी से बोरियत महसूस होने लगती है। बोर होने का मतलब है रुकावट, थकावट, कल्पनाहीनता वगैरह-वगैरह। सवाल है, ऐसी स्थिति में क्या किया जाए? हमें समझना होगा कि जब तक हम कल्पनाशील नहीं होंगे, बोरियत को दूर करने की चेष्टा नहीं करेंगे, तब तक बोरियत हमें अपने चंगुल में जकड़े रखेगी। बोरियत होने के दौरान हमें कोई भी चीज अच्छी नहीं लगती। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि बोरियत एक किस्म का डिप्रेशन है। इसलिए जैसे ही आप बोरियत महसूस करें तुरंत समझ जाए कि आपके साथ कुछ गड़बड़ है।



बोरियत का मतलब: आमतौर पर बोरियत एक जैसी स्थिति से होती है। एक ही तरह के खाने से, एक ही तरह के कपड़ों से, एक ही तरह के काम से, एक ही जगह रहने से, एक जैसी बातों से और एक जैसी रिश्तों से। कुल मिलाकर बोरियत की तह में है एकरसता। अतः

बोरियत को कहें बाय-बाय जिंदगी में भरें नई उमंग

वजहें अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन बोरियत की फीलिंग कभी न कभी सभी को होती है। ऐसे में उसकी वजह तलाशें, उसका समाधान करें और जिंदगी को नई उमंग के साथ जीना शुरू करें।

जीवन में एकरसता से बचना चाहिए। **क्यों होती है बोरियत:** यह कोई बंधा-बंधाया नियम नहीं है कि बोरियत वही महसूस करेगा, जो शादी-शुवा हो। आजकल काम-काजी जीवन से जुड़ा रही युवा लोग भी बोरियत के चंगुल में बहुत जल्दी आ जाते हैं। वे चाहते हुए भी इससे दूर नहीं हो पाते। इसका सीधा सा जवाब यह है कि उनके पास सोशल होने का समय नहीं होता है। दोस्तों से झगड़ने का समय नहीं है। अपनी से बात करने का

समय नहीं है। पार्टी करने का समय नहीं है। समय के अभाव के चलते बोरियत हमारी जिंदगी में गहरे तक घर कर गई है। बोरियत बड़े पैमाने पर प्रेमियों के संबंधों में देखने को मिलती है। हैरानी की बात यह है मौजूदा समय में बोरियत ने सबसे ज्यादा युवा कपल को ही घेरे रखा है, क्योंकि उनके पास एक-दूसरे के लिए समय नहीं है। इस तरह उनके जीवन में एकरसता बहुत आसानी से आ जाती है। वे ऊब से भर जाते हैं।

ऐसे करें बोरियत दूर: पुरुषों को यह समझना चाहिए कि आमतौर पर हर महिला की जिंदगी में उसका प्यार सबसे ज्यादा मायने रखता है। चाहे उसके पास करने को बहुत कुछ हो, चाहे उसके पास सोचने को बहुत कुछ हो, बावजूद इसके उनके जीवन में अपना पार्टनर सबसे खास होता है। लेकिन जैसे ही उसे महसूस होने लगे कि उसका पार्टनर काम के दबाव के चलते उसे नजरअंदाज कर रहा है तो वह गहरे



तक अवसादग्रस्त हो जाती है। वे मौनवैज्ञानिक तौर पर बुरी तरह आहत हो जाती हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं कि मन ही मन कुढ़ना स्वास्थ्य पर बुरा असर

डालता है। इसलिए पुरुषों को चाहिए कि वे अपनी पार्टनर को समय दें और अपने जीवन से बोरियत दूर रखें। **इन पर भी करें अमल:** कपल्स के लिए यह भी जरूरी है कि हमेशा रोमांटिक बने रहें। चाहे स्थितियां कैसी भी क्यों न हो, अपने पार्टनर का सम्मान करें और उसे अपना पूरा समय दें। खासतौर पर पुरुषों को चाहिए कि वे अपनी पार्टनर को जरा भी नजरअंदाज न करें। बोरियत से बचने के लिए हमेशा खुद में नए-नए बदलाव करते रहें। कभी-कभी घर को भी नया लुक दें। बोरियत से दूर हुआ जा सकता है। लड़कियों के लिए खुद को सजाना हमेशा

दिलचस्पी भरा होता है। बोरियत घर रही हो तो खुद को संवारे। यही नहीं रोमांसपूर्ण आकर्षण बनाए रखने के लिए कोशिश करें कि वही ड्रेस पहनें जो एक-दूसरे को अच्छे लगें। अचानक का स्पर्श भी आकर्षण बढ़ाता है, इसलिए मौका बे मौका एक-दूसरे को चुपके से छुएं जब दूसरा किसी और काम में खोया हो। इस तरह से दोनों के बीच लगाव बना रहेगा, जो बोरियत से दूर रखती है। जो लोग सिंगल हैं, वे अपने दोस्तों के साथ आउटिंग और हैंगआउट कर सकते हैं। बोर शब्द बेवद सामान्य प्रतीत होता है और लगता है कि कुछ घंटों में ही हम सामान्य हो जाएंगे। लेकिन ऐसा नहीं हो पाता, क्योंकि बोरियत दीमक की तरह है जो धीरे-धीरे अंदर की जीवंतता को निचोड़ लेती है। इसलिए अपने आस-पास के माहौल में भी निरंतर तब्दीलियां करें और रिश्तों में हमेशा गर्मजोशी बनाए रखें। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान मूण्ड

शोधपरक-संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास का विधिवत विवरण वर्ष 1826 से मिलता है, जब 'उदंत मार्टंड' साप्ताहिक समाचार पत्र के माध्यम से जुगल किशोर शुक्ल ने इसकी शुरुआत की। इसके लगभग 50-55 वर्ष के बाद ही वर्ष 1882 में हिंदी बाल पत्रकारिता की भी नींव पड़ी। उसके बाद से लेकर इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक तक पहुंचने की अपनी यात्रा में बाल पत्रकारिता, किन-किन सोपानों से होकर गुजरी, किन विधियों ने बाल पत्रकारिता को दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और किन प्रमुख बाल पत्रिकाओं ने बाल पाठकों को आकृष्ट करने में महती भूमिका निभाई, इन तमाम पक्षों पर विस्तार से और पूरी प्रामाणिकता के साथ ब्योरा प्रस्तुत करती है, कुछ समय पूर्व छपकर आई पुस्तक-हिंदी बाल पत्रकारिता का इतिहास। इसे सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. सुरेंद्र विक्रम ने लिखा है। इस किताब को कुल पांच अध्यायों में बांटा गया है। पहले अध्याय में वर्ष 1882 से 1947 तक, दूसरे अध्याय में 1948 से 1960 तक, तीसरे अध्याय में 1961 से 2000 तक, चौथे अध्याय में 2001 से अब तक की बाल पत्रकारिता पर विहंगम दृष्टि डाली गई है। पांचवें अध्याय में हस्तलिखित बाल पत्रिकाओं का दुर्लभ विवरण दिया गया है। परिशिष्ट में सौ से अधिक बाल पत्रिकाओं के मुख पृष्ठ का संकलन लेखक के समर्पण और अथक परिश्रम को सिद्ध करता है। कुल मिलाकर यह एक शोधपरक-संग्रहणीय किताब है। *

पुस्तक: हिंदी बाल पत्रकारिता का इतिहास, लेखक: डॉ. सुरेंद्र विक्रम, मूल्य: 600 रुपए, प्रकाशक: भावना प्रकाशन, दिल्ली

व्यंग्य / रमेश सैनी

रामलाल बहुत सहनशील सहिष्णु लंबी सोच वाले व्यक्ति हैं। उनकी सोच बहुत उदारवादी है। *जीना ऐसा ना कोई से दोस्ती ना काहू से बैर। जहां काम पड़े अपना, अपना लो भले हो गैर।* यह उनके जीवन का फलसफा है। वे रोज सुबह चाय-पान के बाद अखबार पढ़ते हैं। उसमें भी सबसे पहले सिटी पेज में साहित्यिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक कार्यक्रमों की सूचना पढ़ते हैं। लंबे अनुभव ने उन्हें सिखा दिया है कि किस आयोजन में स्वरुचि भोजन की व्यवस्था है। अनेक बार यह संयोग हो जाता है कि एक ही दिन में दो-चार आयोजन स्वरुचि भोजन वाले की संभावना होती है। तब यह कयास लगाते हैं कि सबसे अच्छा भोजन कहाँ पर होगा? तब वे उस आयोजन में ठाठ-बाट के साथ सम्मिलित हो जाते हैं। वे साहित्यिक, धार्मिक और राजनीतिक आयोजनों के हिसाब से ड्रेस का चयन करते हैं। रामलाल जी अभिनय कला में मास्टर हैं। जहाँ जैसी जरूरत पड़ी, वैसा अपने को ढाल लेते हैं।

वे कुछ दिन पहले एक साहित्यिक आयोजन में मिल गए। आजकल आयोजन में भी भीड़ जुटाने के लिए स्वरुचि भोजन रख लेते हैं। ऐसे में आयोजक को लगता है कि काफी भीड़ जुटी है और आयोजन सफल हो गया है। आयोजक भी श्रोताओं की सहनशक्ति, धैर्य और विश्वास की परीक्षा लेते हैं, उन्हें लगता है अगर शुरुआत में ही भोजन रख दिया तो लोग खाकर आयोजन से निकल लेंगे। इस वजह से कार्यक्रम के बाद भोजन रखते हैं। पर आयोजक डार-डार और श्रोता पात-पात। कुछ लोग समूह

भूखे भजन न होय गोपाला

अब सब लोग गोला बनाकर खड़े हो गए और एक-दूसरे का सामान आपस में बाँटने लगे। फिर सबने खाना शुरू किया। खाते-खाते बात करने लगे, 'आज खाने में बहुत मशवकत हुई। इसे कह सकते हैं कि हम लोग मेहनत करके ही खाते हैं।'



बनाकर आयोजन को सफल बनाने में योगदान देते हैं। ऐसे समूह में जो चतुर-चालाक और समझदार किस्म के लोग होते हैं, उन्हें आयोजन में शुरुआत में भेज देते हैं। उन्हें अकल होती है कि आयोजन कब खत्म होगा उसका अनुमान लगा लेते हैं। फिर वे कार्यक्रम खत्म होने के आधा-पौन घंटा पहले फोन कर देते हैं। तब उनके लोग भोजन प्रारंभ होने के पहले भोजन स्थल पर पहुंच जाते हैं। रामलाल जी इसी तरह वर्षों से आयोजन को सफल बनाने में अपना योगदान दे रहे हैं।

उस रोज भी आयोजन समाप्त होने पर, जैसे ही स्वरुचि भोजन आरंभ हुआ वहां उपस्थित अधिकांश लोग हमलावर के रूप में भोजन के स्टॉल पर टूट पड़े। मैं भी भीड़ में लग

गया और सबके साथ धक्के खाकर भोजन के स्टॉल तक पहुंच गया। फिर धक्के से आगे बढ़ा तो सलाद, अचार और पापड़ के पास पहुंचा। मेरे आगे खड़े सज्जन मेरी दयनीय स्थिति को देखकर द्रवित हो गए और टमाटर के आठ-दस टुकड़े, दस-बारह पापड़ के टुकड़े मेरी प्लेट में रख दिए। फिर उन्होंने मुझी भर अचार के टुकड़े मेरी प्लेट पर पटक दिए। मैं वहीं रुककर उन्हें कातर निरीह नजरों से देखने लगा। पर भीड़ को मेरा इस तरह रुककर देखना पसंद नहीं आया और मुझे धक्का मार कर लाइन से अलग कर दिया। फिर मैंने अपनी नजरें चारों ओर दौड़ाई, शायद कोई पहचान वाला मिल जाए। तब देखा रामलाल आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। काफी कशमकश के बाद वे हार मान गए और

लाइन से बाहर आ गए। मैंने दूर से उन्हें इशारा किया, यहां कैसे? मेरे पास आकर बोले, 'भाई साहब ने बुलाया था, तो मजबूरन आना पड़ा।' यह उनका तक्रिया कलाम है। मैंने देखा उनकी प्लेट में सिर्फ दाल ही दाल दिख रही थी। मैंने पूछा, 'यह क्या, सिर्फ दाल! किसी वैद्य ने कहा है?' इस पर मुस्करा कर बोले, 'सिर्फ दाल ही ले पाया। आगे बढ़ने से पहले ही भीड़ के धक्के ने इस शरीफ आदमी को समुद्र की लहर की भाँति बाहर कर दिया।' यह कहकर वे एक किनारे खड़े हो चारों तरफ देखने लगे। उनकी नजर लाइन में लगे लोगों से टकराई। एक इशारा आया। उन्होंने संकेत भाषा में उत्तर दिया। तब वह आदमी दो कदम आगे बढ़ा। चार-छः कटोरी प्लेट में रखी और उनमें रायता भरकर बाहर आ

वैसे तो आज के दौर में हर व्यक्ति समय की कमी का रोना रोता रहता है। लेकिन इस बिजी लाइफ में भी अगर कुछ पल आप अपने दोस्तों के साथ बिताते हैं तो इसके कई तरह के फायदे आपको मिलेंगे, जीवन में हमेशा जीवंतता बनी रहेगी।



अपनी बिजी लाइफ में भी कुछ पल हों दोस्तों के लिए

रिलेशनशिप / संस्था सिंह

हर रोज सुबह घर से निकलकर पूरा दिन ऑफिस में काम करने के बाद ट्रैफिक और भीड़ की मुश्किलें झेलने के बाद घर पहुंचकर आप अपने कंफर्टबल जॉन में आ जाते हैं। अपने लिए चाय बनाते हैं और किसी किताब को पढ़ने या कोई मनपसंद फिल्म देखने की सोचते हैं। तभी आपके दोस्त का फोन आता है, जिसकी आपके साथ काफी दिनों से मुलाकात नहीं हुई है। वह आपको रात के समय फिल्म देखने के लिए बोलता है तो आप कहते हैं कि नहीं, अब मेरा कोई मूड नहीं है। लेकिन दोस्त 10-15 मिनट के बाद आपको लोने के लिए आ जाता है। मन नहीं होने के बावजूद आप फिल्म देखने चले जाते हैं। लंबे समय के बाद दोस्त से मिलकर, फिल्म देखकर, उसके साथ वक्त बिताना आपको बहुत अच्छा लगता है। क्या आपने भी ऐसा महसूस किया है?

तनाव होता है कम: यह सच है कि आज के समय में घर से ऑफिस और ऑफिस से घर की व्यस्त दिनचर्या में आपको दोस्तों से मिलने का ख्याल ही नहीं आता है। थकान और तमाम उलझनों के कारण उनके लिए समय निकालना आपके लिए संभव भी नहीं होता। लेकिन विभिन्न सर्वेक्षण इस बात का दावा करते हैं कि अपनी व्यस्त दिनचर्या में भी दोस्तों के लिए वक्त निकालना, आपको काफी हद तक तनावमुक्त करता है। दोस्तों से मिलना, उनके साथ समय बिताना उस समय और जरूरी हो जाता है, जब आप किसी तरह की समस्या से जूझ रहे होते हैं। जाहिर सी बात है, दोस्त के साथ मिलने पर आप उनके साथ अपनी समस्या शेयर करते हैं। आपका दोस्त आपकी समस्या को ध्यान से सुनता है और उसे नए तरीके से देखने और समझने के लिए आपको बहुत नई बातें बताता है, जिससे आपको अपनी वो छोटी सी समस्या जितनी पहले बड़ी लग रही थी, अब और छोटी दिखती है।

ऐसे बिताएं समय: यह जरूरी नहीं कि आप अपने पार्टनर के साथ ही घूमने के लिए जाएं। अपने दोस्तों के साथ भी ट्रिप का प्रोग्राम बना सकते हैं। ऐसी ट्रिप, जिसमें सिर्फ आप अपने आपको और दोस्तों को समय दें। न आपके पास लैपटॉप हो, न ई-मेल चेक करने का झंझट और अपने स्मार्टफोन को भी आप दिन के समय या कुछ खास आवश्यक में स्विच ऑफ कर दें केवल दोस्तों के साथ घूमने का आनंद लें, घूमें, फिरे और पार्टी करें। उनके साथ मिलकर मूवी देखें, कांस्टेंट में शिरकत करें। कोई प्ले देखें। इस तरह की गतिविधियों में शिरकत न करने के कारण हम सामाजिक गतिविधियों से दूर हो जाते हैं। ये वही मौके हैं, जिनके द्वारा आप आपने को सोशललाइज्ड कर सकते हैं।

अलग होता है मिलने का आनंद: अगर आपका दोस्त तनाव में है और वह खुद अपने को घर में बंद कर लेता है, अलग-थलग रहकर वह चिड़चिड़ा और तनावग्रस्त हो जाता है तो यही वह समय है, जब आप उसको उसकी बंद दुनिया से बाहर लाकर अपना सहारा दे सकते हैं। भले ही आजकल मोबाइल फोन, व्हाट्सएप कॉल, ई-मेल या एसएमएस के जरिए हम दोस्तों

से कनेक्ट होते हैं, लेकिन वचुअल दुनिया से निकलकर आमने-सामने की बातचीत का कोई विकल्प नहीं होता। **मिलने की करें पक्की प्लानिंग:** हम अक्सर अपने दोस्तों से मिलने की प्लानिंग तो बहुत करते हैं, लेकिन मिल नहीं पाते। इसके लिए हर बार की मीटिंग के बाद अगली बार मिलने की एक तारीख निर्धारित कर लें और उसके लिए किसी भी सूरत में समय निकालें। जीवन की आपा-धापी के बीच दोस्तों के लिए समय जरूर निकालें। तो अगली बार जब आपसे कोई कहे कि चलो मिलते हैं, इसे एक अनिश्चित समय के लिए न टालें। मोबाइल फोन निकालकर कैलेंडर देखकर तुरंत पहले से एक तारीख तय कर लें और अपने शेड्यूल को उसी हिसाब से अडजस्ट करके अगली बार जरूर मिलें। *



अनोखा शहर
शिखर चंद जैन

भारत के पड़ोसी मुल्क चीन का शहर हार्बिन अपने आप में कई सारी खूबियां समेटे हुए है। ‘आइस सिटी’ यानी ‘बर्फ का शहर’ नाम से मशहूर यह शहर अपने ठंढे-बर्फाले वातावरण के साथ-साथ यहां के दर्शनीय स्थलों और विभिन्न आयोजनों की वजह से दुनिया भर में मशहूर है।

कभी-कभी आपके मन में ख्याल आता होगा कि कितना अच्छा हो कि इस चिलचिलाती धूप और झुलसा देने वाली गर्मी से बचने के लिए हम किसी बर्फ के शहर में पहुंच जाएं। यह सिर्फ किस्सों-ख्वालों की बात नहीं है। दुनिया में वास्तव में मौजूद है एक ऐसा ठिकाना जो कहलाता है, बर्फ का शहर। जी हां, हम बात कर रहे हैं चीन में बसे अनूठे शहर हार्बिन की।

हार्बिन का इतिहास: इस अनूठे शहर की स्थापना रूस द्वारा एक बस्ती के रूप में की गई थी। इसका निर्माण व्यादिवोस्तोक और रूसी पोर्ट आर्थर (अब डालियान) के बीच रेलवे

(1896-1904 में निर्मित) को सपोर्ट देने के लिए किया गया था। यह कभी सोंगहुआ नदी पर स्थित एक साधारण गांव था, जहां के वाशिनो की आजीविका का मुख्य साधन मछली पकड़ना था। बाद में बड़ी संख्या में रूसी और यूरोपीय प्रवासी हार्बिन में आए, जिससे शहर में विदेशी संस्कृति और स्वाद आया। ये लोग अपने साथ अपनी यूरोपीय परंपराएं और मान्यताएं भी लेकर आए। इन्हीं सब कारणों से हार्बिन का रंग-ढंग और यहां की संस्कृति बदली।

मिली-जुली संस्कृति: ‘आइस सिटी’ यानी ‘बर्फ का शहर’ के नाम से मशहूर हार्बिन, चीन के हेइलॉंगजियांग प्रांत की राजधानी है। यहां

रोचक / अपराजिता

समय की सटीक गणना करना हमें जितना आसान लगता है, उतना होता नहीं है। इसमें कई फैक्टर्स काम करते हैं। समय की सटीक गणना करने की प्रक्रिया कब कैसे शुरू हुई, जानिए।

आज भी आसान नहीं है समय की सटीक गणना

अगर आपने कभी समय की सटीक सूक्ष्मता पर गंभीरता से नहीं सोचा तो एक मायने में कहना होगा कि आप समझदार और व्यावहारिक व्यक्ति हैं, क्योंकि भले आम आदमी के लिए आज टाइम या समय जानना बेहद आसान हो। हम मोबाइल से लेकर लैपटॉप तक कहीं भी एक नजर डालकर पलक झपकते समय जान लेते हैं। लेकिन अगर आप समय को भौतिक विज्ञान की नजर से समझने में रुचि

रखते हैं तो समझ लीजिए आपके लिए सही समय जानना, वाकई रॉकेट साइंस जैसा जटिल हो जाएगा। जी हां, तकनीक के इस अतिविकसित काल में भी सही समय जानना और लगातार सही समय के साथ संपर्क में रहना कितना जटिल है, इसे वही लोग जानते हैं, जिन्हें हम टाइम कीपर कहते हैं।

इसलिए होता है कठिन: सटीक समय जानना इसलिए कठिन होता है क्योंकि समय की सटीकता केवल घड़ी देखने तक सीमित नहीं होती है, बल्कि यह वैश्विक संचार, नेविगेशन, वित्तीय लेन-देन और वैज्ञानिक अनुसंधानों से गहराई से जुड़ी हुई स्थिति है। टाइमकीपर्स के लिए यह एक

हूंसान को सटीक समय जानने की सुविधा कब और कैसे मिली? इस सवाल का जवाब है, प्राचीन काल में कई प्रयोगों के बाद यह सीमागत हासिल हुई है। पहले सूर्योदय और जलघड़ी जैसी तकनीकों से समय मापा जाता था, लेकिन ये मौसम और मौनोलिक स्थितियों पर निर्भर हुआ करती थी। इसके बाद आया यांत्रिक घड़ियों का युग (13वीं-14वीं सदी)। सबसे पहले यूरोप में यांत्रिक घड़ियां बनीं, लेकिन इनमें लाख कोशिशों के बावजूद कुछ मिनटों का फर्क रह जाता था। इन्हीं दिनों यानी अठारहवीं शताब्दी में समुद्री यात्रा में सटीक समय जानना अनिवार्य हो गया, क्योंकि तभी समुद्री जहाज अपनी सही स्थिति जान सकते थे। इस सिलसिले में सन 1761 में सॉन हैरिसन ने पहला समुद्री क्रोमोमीटर बनाया, जिससे सटीक समय मापना संभव हुआ।

समय का पहिया आगे बढ़ा फिर 19वीं सदी में रेलवे और टेलीग्राफ का युग आया। आगे चलकर टूटों के समय समन्वय के लिए भी सटीक समय जानना जरूरी हो गया। सन 1884 में पहली बार वैश्विक समय-क्षेत्र यानी टाइम जोन बनाए गए। साथ ही इसी दौर में टेलीग्राफ नेटवर्क ने एक घड़ी को दूसरी से जोड़कर सही समय पहुंचाने में मदद की। सही समय जानने का अगला तरीका था परमाणु घड़ी। बीसवीं सदी का यह समय सचमुच अल्ट्रा-सटीक समय था। सन 1949 में पहली परमाणु घड़ी बनी, जिसने

माइक्रोसेकेंड स्तर की सटीकता दी। इससे भी आगे 1967 में सेसियम परमाणु घड़ी के आधार पर सेकेंड को परिभाषित किया गया। भला तब कौन जानता था कि आने वाले दिनों में जीपीएस और

इंटरनेट आने वाला है, जिसके लिए टाइम की नैनो सेकेंड तक की सटीकता की दरकार होगी। आज जीपीएस सैटेलाइट्स परमाणु घड़ियों का उपयोग करके हमें सटीक समय देते हैं। आज इंटरनेट टाइम प्रोटोकॉल से दुनिया भर के कंप्यूटर और स्मार्टफोन सही समय सिंक कर पाते हैं।